IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 2, Issue 2, February 2021
Impact Factor: 5.731

उमराव सिंह जाटव का कथा साहित्य दमन और प्रतिकार का आख्यान

डॉ अजय कुमार बिन्द
असि प्रोफेसर – हिंदी
राजकीय महाविद्यालय, नानौता ,सहारनपुर
drajaybind@gmail.com

रचनाकार उमराव सिंह जाटव का जन्म 08 फरवरी 1948 को चिटहरा , गौतम बुद्व नगर उ0प्र0 में हुआ । उनका पिता भारतीय सेना में सैनिक थे। वे द्वितीय विश्व युद्व में वे मिश्र और तुर्की में मित्र राष्ट्रों के लिए मोर्चे पर लड चुके थे। सैन्य परंपरा उनके परिवार में विरासत के रूप में स्थापित हुई । उनके बडे भाई भी भारतीय सेना में शामिल हुए। पिता की जागरूकता का शायद यह प्रभाव था कि उन्हे ईसाई मिशनरी में पढने का मौका मिला । लेकिन पॉचवी से आगे पढाई के लिए उन्हाने स्थानीय स्कूल में प्रवेश किया । वहॉ से इण्टर पास करने के बाद उच्च शिक्षा के लिए उन्होने गाजियाबाद के एम.एम.कालेज कालेज में प्रवेश लिया। बी.ए. और चित्रकला में एम.ए. की शिक्षा प्राप्त की। एम.ए. में शिक्षा के दरम्यान ही उनका चयन पुलिस उपाधीक्षक के पद पर हो गया था। लेकिन दुर्घटना के कारण वे उस वर्ष नौकरी में प्रवेश नहीं पा सके । उन्होने इस पर हार नहीं मानी । उनके बडे भाई ने उनका सम्बल बढाया। पुन; परीक्षा में सफलता प्राप्त कर उन्होने उसी पद को प्राप्त किया। उन्होने पूरे देश आतंकवाद ग्रस्त और नक्सलवाद के प्रभाव वाले क्षेत्रों में कार्य किया । उन्हे अपनी सेवाओं के लिए कठिन सेवा पद और राष्ट्रपति द्वारा सराहनीय सेवा पदक प्राप्त किया। पुलिस की उन्होनें 36 वर्ष की सेवा की और वर्ष 2008 में पुलिस उपमहानिरीक्षक के पद से सेवानिवृत्त हुए। स्वयं अपने एक परिचय में उन्होने बताया कि बचपन से ही साहित्य की ओर उनका झुकाव रहा । आठ वर्ष की अवस्था में ही उन्होने पहली कहानी लिखी। माहौल इस प्रकार था कि वह कहानी कोई फल दिए बिना ही बरसात में गल गई। लेकिन उनके मन में साहित्य रचना की ललक बनी रही। इस ललक को उन्होने अपनी सेवा के आखिरी पडाव में ठोस रूप देना शुरू किया । उनकी रचनाएं निम्न है–

- कविता ; अतीत से झांकते सम्बन्ध
  ; प्रतिरोध के स्वरों पर सवार (कविता संग्रह)
- कहानी संग्रह ; आधे दलित का दुख
- उपन्यास ; थमेगा नहीं विद्रोह

इनका सबसे चर्चित उपन्यास थमेगा नहीं विद्रोह है। इस उपन्यास मे वर्णित गॉव मानो पश्चिमी उत्तर प्रदेश के गॉव का प्रतिनिधि है। दरियापुर में स्त्री सामंती परिवेश में ही जी रही है। उसकी सामाजिक हैसियत पुरूष समाज की सम्पत्ति के समान है। वह स्वयं सम्मान का विषय नहीं है बल्कि समाज के सम्मान का बिजूका मात्र है। जब गूजर पंचायत अपनी हार से तिलमिला उठती है , तब वे जटवाडा की इज्जत पर हमला करते है। इस बस्ती की स्त्री की अस्मत पर हमला करते है। स्त्री के साथ जोर जबरदस्ती के अधिकतर मामलों में यौन के बजाय पितृसत्ता की मानसिकता के तहत पुरूष अहं को दर्शाना ही मुख्य मकसद होता है। लेकिन उपन्यास मे कई विलक्षण स्त्री पात्र है। यें पात्र सामान्यीकरण से अलग अपना वजूद रखते है। आरंभ में ही हमें खाला के दर्शन होते है। खाला समूचे दरियापुर की खाला है। जाति और मजहब की दीवारे से परे सभी के साथ उनका

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 2, February 2021 Impact Factor: 5.731

बात –व्यवहार है। गॉव वाले भी उन्हे कुछ मजाक में , कुछ लगाव मे खाला कहकर बुलाते है। खाला की सबसे बडी विशेषता उनकी जिंदादिली है , खुशमिजाज स्वभाव है । उनके पास खुश रहने की कोई वजह नहीं है। उम्र के इस पडाव में भी उनका व्याह नहीं हो पाया है ,, न पति , न बच्चे । भाई के घर में आसरा है। जब चाहा इज्जत दी और जब चाहा तो इज्जत उतार भी दी। इसके बावजूद उनके भीतर अदम्य जीवन की शक्ति है।

उपन्यास को किस्सागोई की शैली की रचा गया है। इसमें कई कहानियॉ –फकीर और खाला की प्रेम कहानी , भागमली का विवाह , मुंडा बनाम खडेसरी बाबा , अंत में चावली के विद्रोह और स्वतंत्रता आदि , चलती रहती है। कोई पात्र महानायक के रूप में उभर कर नहीं आता है। सामान्य व्यक्ति ही नायक ,खलनायक और विदूषक की भूमिकाओं में है। चावली की मां उसके लिए धात्री के नाते नायक है , उसे मैला ढोने के काम में घसीटती है तो खलनायक है और जब महातमा जी की बात का प्रवचन देती है तो विदूषक लगती है। रचनाकार की माने तो दरियापुर ही नायक है। दलित जीवन को उसके संघर्ष और उसकी सरसता के साथ व्यक्त किया गया है। रचनाकार दुखों को बोझ की तरह नहीं दिखाते कि पाठक उसे गले में बॉध कर डूब जाय । यह समाज अभाव के साथ रहता है लेकिन इन अभाव के बीच भी वह वह हास परिहास से अपनी जीवनी शक्ति बनाए रखता है। प्रभु जाति गूजर , दलितों के कुएं पर कब्जा कर लेते है। ऐसे में दलित समाज आर पार के संघर्ष के लिए तैयार होता है। पंचायत बुलाई जाती है और टक्कर लेने के लिए मथुरा को नेता चुना जाता है। नेता होना किसी भी व्यक्ति के लिए गौरव का विषय हो सकता है। लेकिन धन और संख्या बल में गूजर काफी आगे थे। ऐसे में लेखक ने दिखाया है कि मथुरा बाहर से तो बहादुर दिखने का प्रयास कर रहा है लेकिन अंदर उसके मन में क्या चल रहा है – '' मन ही मन मथुरा जान चुका था कि आज के इसी क्षण से न उसका जीवन सुरक्षित था , न मान सम्मान। गूजरों के हाथों उसका मानमर्दन अब भविष्य में जब तब होते रहना निश्चित था। '' यह उपहास जिन्दगी के साथ दो हाथ करने वालों के पास होता है , जिंदगी से भागने वालों के पास नहीं। यही वृद्व मथुरा आगे चलकर जोरदार संघर्ष करता है। मथुरा पर पडे थप्पड से ही संघर्ष आरंभ होता है। इस मुकाबले में वे तो जीत नहीं पाते है लेकिन संघर्ष इस शिद्दत से करते है कि जीतने वाले के भीतर जीतकर भी डर बैठ जाता है। यह दरियापुर के लोगों की जीवनी शक्ति का प्रभाव है। लेखक ने बहुत संवेदना से उनकी जीवनी शक्ति को उभारा है। छिद्दा और ननकू की पत्नियां आपस में गुत्थम गुत्था होती है । छिद्दा की पत्नी खुद को लडाई में कमजोर पाती है। इस अपमान को वह अपने पति की हैसियत के धौंस से पूरा करती है। वह अपने पति की ताकत का हवाला कुछ इन शब्दों में देती है– '' फांसी पर चढता होवै कोई तै चढते चढते नै तार देवै , अर कोई उतर रया होवै तै उन्नै फॉसी पै चढा देवै । '' लेखक आगे कहते है कि इस अपार ताकत का , स्कूल की चौकीदारी करने वाले छिद्दा को भी शायद इल्म भी न रहा होगा , बेचारा वो तो डंडा लिए कुत्ता भगाता रहता है। जटवाडा के लोग इनकी लडाई में भी भरपूर आनंद लेते है। इन झगडालू औरतों को गूजरों से लडवा देने का सुझाव भी रखते है।

समूचा उपन्यास जिन्दगी की त्रासदी और उल्लास से धागे से बुना गया है। इसमें भागमली का यह भाग्य है कि वह सुहागन बनती है मर जाने के लिए । चावली इलाके की सबसे एक्सपर्ट दाई है और खुद उसकों बच्चा पैदा कर पाने सौभाग्य कभी नहीं मिला। मुंडा सॉड की तरह यौन उर्जा से भरपूर है और खुद उसकी पत्नी संतुष्टि के लिए पर पुरूष का सहारा लेती है। खाला मुहल्ले भर में लाड प्यार बॉटतीं है और उन्हे समाज अपने प्यार से वंचित रखता है। दलित समाज का जीवन अभाव का जीवन है । कुछ नजर आते है कुछ नहीं । बाकि उॅची जाति का सताना भी कम नहीं होता है। ऐसे में भी जटवाडे के निवासी अपने उपर हॅसने का कोई अवसर नहीं जाने देते। एक आक्षेप जो रेणु पर लगाया गया था ,वह उमराव सिंह जाटव पर भी लगाया

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 2, February 2021 Impact Factor: 5.731

जा सकता है कि वे दलित की गरीबी और त्रास के बीच में सतही रूप से हास परिहास पर अपना ध्यान केन्द्रित करते है। लेकिन यह आरोप ही सतही है , क्योकि कोई समाज जब खुद अपने उपर हॅसी करने लगे तो यह समझना चाहिए कि उसके भीतर आत्मविश्वास है और संघर्ष का हौसला भी। प्रसंग आता है कि गूजरों के साथ संघर्ष में दसौंदी मारा जाता है । समूचा गॉव उसके लिए श्मशान पर इकट्ठा होता है। ऐसे दुख की घडी में रौतास ' को जब सौनपाल की खोपडी नजर आई तो वह बोला '' चल भैया सौनपाल , अब किसी अच्छी जूण में पडीयो , जाटवन की जूण में मत पडियों नही तो मै अबी फिर सू यहीं बिखेर दैउगौ। '' यह बात जितनी सौनपाल पर कही गई , उतनी ही दलित समाज पर , उससे भी कहीं अधिक खुद पर कहीं गई । इसी तरह ईशू की प्रार्थना और सोनू शराबी के जैसे कई प्रसंग है। यह सस्ती रचना नहीं है जिसमें पात्रों के पहनावे , उनकी किस्मत अथवा उनके शौंच करने के तरीके का मजाक बनाया जाता है। इसमें पात्र स्वयं अपनी हॅसी बनाता है और उसके एक एक कहकहे पर उसका अपना आत्मविश्वास बोलता है – दलित समाज का आत्मविश्वास । यह विश्वास ही उनकी जीवंतता का आधार है ।

दरियापुर में हम मुख्यत; सामाजिक पहचान के रूप में गूजर , जाटव ,बाल्मिकी , और मुस्लिम को पाते है। यह सामाजिक गठन परंपरागत वर्ण व्यवस्था ढांचे की व्यवहारिकता को आदर्श रूप में नहीं दर्शाता है। लेकिन वर्ण व्यवस्था के मूल्यों को समाज में लागू करने की चिंता बरकरार है। गूजर स्वयं शूद्र वर्ण में आते है। यह वर्ण , व्यवस्था के सबसे नीचे के सोपान पर है। लेकिन खेती का स्वामित्व होने के कारण उन्हे संभव हो तो बेगार और नही तो सस्ते श्रम की आवश्यकता है। यह कार्य दरियापुर की जाटव जाति से करवाने के लिए वे साम ,दाम ,दण्ड और भेद का सहारा लेते हैं। इस श्रम पर अधिकार के लिए गूजर ब्राहाण व्यवस्था की विषमता को बरकरार रखने को उतारू है। जबकि ईट भट्ठा के पंडित श्रीप्रकाश और आर्यसमाज जैसे कुछ अपवाद प्रसंगो को छोड दे तो ब्राहाण पूरी तरह से दरियापुर में अनुपस्थित है। फिर वर्ण व्यवस्था के बीज के प्रसार का कार्य किसके द्वारा किया जा रहा है। उनका कार्य गूजर द्वारा किया जाता है। वे ही तुल्ले भगत को ब्राहाण का कार्य करने से रोकते हैं , ब्राहाण एकाधिकार के लिए हमला कर देते है लेकिन जटवाडा की नई पीढी इन मूल्यों को स्वीकार करने को तैयार नहीं है। इस पीढी का सम्बल है कि बर्जुग मथुरा की भुजाएं भी फडकने लगी – '' ताउ मथुरा को पूर्ण विश्वास है कि **थमेंगा नहीं विद्रोह** । इस आग को चिनगारी नहीं बनने देना है कभी भी , इसे दावानल बनाना होगा । ''